2 तीमुथियुस

पौलुस का तीमुथियुस (तिमोथी) को लिखा गया दूसरा पत्र

1 पौलुस की ओर से जो उस जीवन की
प्रतिज्ञा के अनुसार जो यीशु मसीह में है,
परमेश्वर की इच्छा से यीशु का प्रेरित[a] है,
2 मेरे अति प्रिय बेटे तिमोथी, तुम्हें परमेश्वर
पिता और यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह
दया और शान्ति मिले।
3 मैं अपने उस परमेश्वर का आभारी हूँ,
जिस की सेवा मैं शुद्ध विवेक से करता हूँ
जैसी मेरे पूर्वजों ने की। मैं रात-दिन अपनी
प्रार्थनाओं में तुम्हें निरन्तर याद करता हूँ।
4 तुम्हारे आँसुओं को याद करने पर मेरे भीतर
बड़ी लालसा होती है, कि मैं तुम्हें देख कर
खुशी से भर जाऊँ। 5 जो विश्वास पहले
तुम्हारी नानी लोइस और माँ यूनिस में था और
जिस की याद मुझे आती है, मैं निश्चित हूँ कि
वही सच्चा विश्वास तुम में है। 6 मेरे हाथों
के तुम्हारे सिर पर रखे जाने से जो वरदान
तुम्हें मिला था, मैं उसे याद दिलाना चाहता
हूँ कि तुम्हें अपने जीवन में परमेश्वर के उस
वरदान को चमकाने की ज़रूरत है। 7 क्योंकि
परमेश्वर ने हमें डर की नहीं किन्तु शक्ति[b],
प्यार और संयम[c] की आत्मा दी है।
8 यीशु की और मुझ कैदी की गवाही से तुम
शर्मिन्दा न हो, किन्तु परमेश्वर की ताकत से
सुसमाचार सुनाये जाने के कारण आने वाले
कष्टों को मेरे साथ सहो। 9 उन्होंने हमें मुक्ति
दी और पवित्र बुलाहट से बुलाया है। यह
बुलाहट हमारे भले कामों के कारण नहीं,
किन्तु उनके अपने उद्देश्य और अनुग्रह[d] के
कारण थी, जो सृष्टि के बनाए जाने से पहले
मसीह यीशु में हमें मिली थी। 10 जिस यीशु
मसीह ने सुसमाचार के द्वारा मौत को नाश
किया और जीवन एवं अमरता को हमारे
सामने रखा, उन्हीं मुक्तिदाता यीशु मसीह के
पृथ्वी पर आने से यह[e] अब हमारे सामने रखी
है। 11 गैर यहूदियों को यही सुसमाचार देने के
लिए मैं एक संदेशवाहक, प्रेरित और शिक्षक
ठहराया गया हूँ। 12 इसी कारणवश मैं इन
दुःखों को झेल रहा हूँ, फिर भी मैं शर्मिन्दगी
महसूस नहीं करता हूँ।मैं यह जानता हूँ, कि
जिन पर मैंने भरोसा किया है उन्हें जो कुछ
मैंने सुपुर्द कर दिया है, उसे वह उस दिन तक
संभालने के लायक हैं।
13 मसीह यीशु में विश्वास और प्रेम के साथ
जो सही शिक्षा तुमने मुझ से सुनी थी, उसे
मज़बूती से पकड़े रहो। 14 जो अच्छी वस्तु
तुम्हें सौंपी गयी थी, उसे हमारे भीतर रहने
वाले पवित्र आत्मा के द्वारा संभाले रहो।
15 तुम्हें मालूम है कि एशिया में सभी, यहाँ
तक कि फ़ुगिलुस और हिरमुगिनेस ने भी हमें
छोड़ दिया था।
16 उनेसिफ़ोरस के परिवार के ऊपर यीशु
कृपा करें, क्योंकि कई बार उसने मेरी हिम्मत
बढ़ायी और मेरे कैदी होने के कारण उसने
शर्म महसूस नहीं की। 17 जब वह रोम में
आया, तो बहुत मेहनत करके मुझे खोजता
रहा और मुझे पा भी लिया। 18 प्रभु करे कि
उस दिन वह परमेश्वर की दया को हासिल
कर सके। तुम्हें तो मालूम है कि इफ़िसुस में
उसने कई तरह से मेरी सेवा की थी।

---

[a] **1.1** भेजा हुआ [b] **1.7** सामर्थ [c] **1.7** ठण्डे दिमाग [d] **1.9** शर्तहीन कृपा [e] **1.10** मुक्ति और पवित्र बुलाहट

2 इसलिए हे मेरे बेटे, मसीह यीशु में जो
अनुग्रह[a] है, उसमें मज़बूत हो जाओ।
2 अनेक गवाहों की उपस्थिति में, तुमने जो
कुछ मुझ से सुना था, उन्हीं बातों को उन
विश्वास योग्य लोगों को सौंप दो, जो दूसरों
को भी सुनाने के योग्य हैं। 3 यीशु मसीह
के अच्छे सैनिक की तरह मेरे साथ दुखों[b]
को सहते रहो। 4 ऐसा संभव ही नहीं कि
एक व्यक्ति सेना में भर्ती होने के बाद आम
आदमी[c] के समान जीवन बिताना चाहे। ऐसे
में वह अपने भर्ती करने वाले को खुश नहीं
कर सकता है। 5 इसी तरह से जो व्यक्ति
खेल-कूद प्रतियोगिता के नियमों का पालन
न करे, तो भाग लेने के बावजूद भी वह
पुरस्कार प्राप्त करने के योग्य नहीं होता।
6 मेहनती किसान इस बात का अधिकारी
है, कि फ़सल का सब से पहला हिस्सा प्राप्त
करे। 7 जो मैं कह रहा हूँ, उस पर ध्यान दो।
सभी बातों में यीशु तुम्हें समझ दें।

8 यह याद रखो कि मेरे सु-संदेश के अनुसार
दाऊद के वंश के यीशु मसीह मरे हुओं में
से जिलाए गए। 9 इसी सत्य को दूसरों तक
पहुँचाने के कारण मैं एक अपराधी की तरह
दुःख उठा रहा हूँ, यहाँ तक कि जंजीरों से
बन्धा हुआ हूँ, किन्तु परमेश्वर का वचन
जंजीरों से बंधा हुआ नहीं है। 10 परमेश्वर
के चुने हुओं के कारण मैं सब कुछ सहता
हूँ, ताकि वे भी उस मुक्ति को पा सकें जो
अनन्त महिमा के साथ मसीह यीशु में है।

11 यह सच है कि यदि हम उनके साथ
मर चुके[d] हैं, तो हम उनके साथ जीवित भी
रहेंगे। 12 यदि हम सहते रहें, तो उनके साथ
शासन भी करेंगे। यदि हम उनका इन्कार करें
तो वह भी हमारा इन्कार करेंगे। 13 यदि हम
भरोसेमन्द न भी रहें, तौभी वह भरोसेमंद हैं,
वह स्वयं अपना इन्कार नहीं कर सकते।

14 इन बातों को उन्हें याद दिलाओ और
गंभीरता से प्रभु यीशु की उपस्थिति में ऐलान
करो, कि वे शब्दों के बारे में झगड़ा न करें।
क्योंकि उससे कोई लाभ नहीं है और सुनने
वालों को बर्बाद करते हैं। 15 इस तरह का
हर संभव प्रयत्न करो कि खुद को परमेश्वर
के सामने ऐसे पेश करो जैसा उन्हें कबूल है।
एक ऐसे कार्यकर्ता बनो जो सच्चाई के वचन
का सही इस्तेमाल करे और इस से शर्मिन्दा न
हो। 16 बेकार की बकबक से बचो, क्योंकि
इस से लोग और अधिक भ्रष्ट होते जाएँगे।
17 उनकी शिक्षा कॅन्सर के समान फैलती
जाएगी। इन्हीं में से हिमुनयुस और फ़िलेतुस
भी हैं। 18 यह कह कर कि मरे हुए जीवित हो
चुके हैं, वे सत्य से दूर हो गए हैं और लोगों
के विश्वास को डगमगा रहे हैं। 19 वे सत्य
से दूर हो गए हैं। चाहे कुछ भी हो, परमेश्वर
की मुहर इस नींव के साथ बनी हुयी है, कि
परमेश्वर अपने लोगों को पहचानते हैं तथा
जो कोई मसीह का नाम लेता है, वह दुष्टता
से दूर रहे।"

20 एक बड़े घर में मात्र सोने और चान्दी
के बर्तन ही नहीं होते हैं, किन्तु लकड़ी और
मिट्टी के भी होते हैं। कुछ खास इस्तेमाल
के और कुछ मामूली इस्तेमाल के लिए।
21 इसलिए जो व्यक्ति अपने आपको ऊपर
बताए अनादर का पात्र होने से शुद्ध करेगा,
वह अपने मालिक के लिए शुद्ध, उपयोगी
और हर एक अच्छे काम के लिए तैयार
आदर का पात्र होगा।

22 अपनी जवानी की इच्छाओं पर लगाम
लगाओ और जो लोग शुद्ध मन से यीशु

[a] **2.1** शर्तहीन कृपा [b] **2.3** मुश्किलों [c] **2.4** नागरिक [d] **2.11** सज़ा भुगत चुके

से प्रार्थना करते हैं, उनके साथ मिल कर ईमानदारी, विश्वास, प्रेम और शान्ति के पीछे लगे रहो। 23 यह जानते हुए कि मूर्खता और नासमझदारी की बकवास से झगड़े होते हैं। इन बातों से बचो। 24 मसीह के सेवक को झगड़ालू होने के बजाए दयालु, सिखाने लायक और धीरज वाला होना चाहिए। 25 अपने विरोधियों को नम्रता से सिखाना चाहिए कि शायद परमेश्वर उन्हें मन बदलने का मौका दें ,ताकि वे सच्चाई की पूरी पहचान कर सकें। 26 हो सकता है अभी वे शैतान की इच्छा पूरी करने के लिए उसके जाल में फँसे हैं, लेकिन वे होश में आकर शैतान के जाल से छूट जाएँ जिस में उसने उन्हें कैद कर रखा है।

3 यह भी जान लो, कि अन्त के दिनों में बहुत परेशानियों के दिन आयेंगे। 2 लोग स्वयं से प्रेम करने वाले और धन के लोभी, अपनी ही डींग हाँकने वाले, घमण्डी, परमेश्वर के विरोध में कहने वाले, माता-पिता की बात टालने वाले, धन्यवाद न देने वाले और अशुद्ध, 3 स्वभाविक प्रेम रहित, क्षमा न करने वाले, बदनामी करने वाले, बिना सयंम के, निर्दयी और अच्छाई के विरोधी होंगे। 4 विश्वासघाती, ज़िद्दी, घमण्डी और परमेश्वर को चाहने के बजाए सुखविलास की खोज करने वाले होंगे। 5 धर्मी दिखेंगे, किन्तु इसकी शक्ति का इन्कार करने वाले होंगे। ऐसे लोगों से दूर रहना।

6 इसी तरह के कुछ लोग उन मूर्ख स्त्रियों के घरों में चालाकी से पहुँच कर उनको अपने वश में कर लेते हैं, जो हर तरह की दुष्टता से लदी और लालसाओं के वश में हैं। 7 ये महिलाएँ कुछ न कुछ नया सीखती रहती हैं, लेकिन सत्य को कभी नहीं पहचानती हैं। 8 जिस तरह से यन्नेस और जैम्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया, उसी तरह से गंदे मन वाले लोग सच्चाई का विरोध करते हैं और जहाँ तक विश्वास का प्रश्न है,ये किसी काम के नहीं। 9 ऐसे लोगों को कोई सफ़लता नहीं मिलेगी और जिस तरह से मूसा के विरोधियों की मूर्खता सब के सामने आ गयी, उनके साथ भी ऐसा ही होगा।

10 किन्तु तुमने मेरी शिक्षा, लक्ष्य, विश्वास, धीरज, प्यार और सहनशीलता को देखा है। 11 अन्ताकिया, इकुनियम और लुस्त्रा में मुझे किन-किन सताव और कठिनाईयों का सामना करना पड़ा? मैंने क्या-क्या न सहा? लेकिन यीशु ने मुझे उन सब से छुड़ा लिया। 12 जो लोग यीशु मसीह के होने के कारण खरा जीवन जीना चाहते हैं, वे सताए जाएँगे। 13 लेकिन दुष्ट और धोखेबाज़ लोग बद से बदतर होते जाएँगे, वे खुद धोखा खाते हुए दूसरों को भी उस गड्ढे में ढकेलेंगे। 14 परन्तु यह जानते हुए कि तुमने किस से शिक्षा पायी है, तुम्हें वह सब करते रहना चाहिए, जो तुमने मुझ से सीखा है और विश्वास किया है। 15 बचपन से तुम वचन[a] को जानते हो, जो तुम्हें मसीह यीशु पर विश्वास करके मुक्ति पाने के लिए अक्लमन्द बनाता है। 16 पूरी बाइबल परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से रची गई है। यह सिखाने, कायल करने, गलती सुधारने और सही कार्य करने की दिशा

[a] **3.15** बाइबल

दिखाने के योग्य है, 17 ताकि परमेश्वर का
जन स्वयं मज़बूत हो एवं प्रत्येक अच्छे
काम के लायक और तैयार हो।

4 परमेश्वर, यीशु मसीह जो दूसरी बार
आकर मरे हुओं और जीवित लोगों
का इन्साफ़ करेंगे और राज्य करेंगे, उनकी
मौजूदगी में तुम्हें मैं यह आदेश देता हूँ,
2 परमेश्वर का संदेश[a] सुनाओ, हर समय
तैयार रहो। गलतियों का मुकाबला करो,
लोगों को डाँटो, धीरज के साथ सिखाओ
ताकि लोगों की हिम्मत बढ़े। 3 एक समय
आएगा, जब लोग सही शिक्षा को न सह
सकेंगे, किन्तु अपनी पसन्द की बातों को
सुनने और उन से सन्तुष्टि पाने के लिए
ढेर सारे शिक्षकों को बटोर लेंगे। 4 अपने
कानों को सत्य से हटा कर वे अपना ध्यान
खोखली कहानियों पर लगाएँगे। 5 तुम सब
बातों में सचेत रहो, दुख उठाओ, दूसरों तक
सुसमाचार पहुँचाने का काम करते हुए अपनी
सेवा को पूरा करो।

6 मैं उण्डेले जाने वाली भेंट की तरह हूँ और
इस पृथ्वी पर से मेरे जाने का समय आ गया
है। 7 मैंने प्रतियोगिता[b] में पूरे तन मन से भाग
लिया है। मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है और
विश्वास की रक्षा की है। 8 धार्मिकता का
वह मुकुट मेरे और उन सब के लिए रखा है
जिसे, सच्चे जज[c] यीशु मुझे देंगे और केवल
मुझे ही नहीं बल्कि यीशु के आने की चाहत
रखने वाले सभी लोगों को उस दिन देंगे।

9 मेरे पास जल्दी आ जाओ। 10 आज की
दुनिया की मोह-माया की चाहत की वजह
से देमास मुझे छोड़ कर, थिस्सुलुनीके चला
गया है। क्रेसेंस गलातिया चला गया है
तथा तीतुस दलमतिया। 11 मात्र लूका मेरे
साथ है। मरकुस को अपने साथ ले आओ,
क्योंकि सेवकाई में वह मेरे लिए मददगार है।
12 तुखिकुस को मैंने इफ़िसुस भेज दिया है।
13 त्रोआस में कार्पुस के घर पर मेरा चोगा,
किताबें तथा नोट्स[d] विशेषकर पार्चमॅन्ट छूट
गए थे, आते समय वह सब ले आना।

14 एलेक्ज़ेन्डर ठठेरे ने मेरी बहुत हानि
की थी। उसकी करतूतों को मैंने परमेश्वर
को सौंप दिया है। 15 तुम भी उससे सम्भल
कर रहना, क्योंकि उसने हमारे वचन का
डट कर विरोध किया था। 16 मेरी पेशी के
समय, किसी ने मेरा साथ नहीं दिया, मुझे
अकेला छोड़ दिया था। मैं प्रार्थना करता हूँ
कि परमेश्वर उन सभी को माफ़ करें। 17 फिर
भी यीशु मेरी ओर थे और उन्होंने मुझे हिम्मत
दी, ताकि मेरे द्वारा पूरा-पूरा प्रचार हो, और
सभी गैरयहूदियों तक संदेश पहुँचे। मैं शेर के
मुँह से छुड़ा लिया गया था। 18 यीशु मुझे हर
एक बुरे हमले[e] से छुड़ा कर अपने स्वर्गिक
राज्य के लिए सुरक्षित रखेंगे।

19 युगानुयुग उन्हीं को महिमा मिले। ऐसा
ही हो। उनेसिफ़ोरस के घराने, प्रिस्का और
अक्विला को सलाम। 20 इरास्तुस कुरिन्थुस
ही में रह गया था, लेकिन लेनित्रुफ़िमुस
को बीमारी की हालत में मैंने मिलेतुस
में छोड़ा है। 21 सर्दी शुरू होने से पहले
आने की कोशिश करना। यहाँ यूबुलुस,
पुदेंस, लायनस, क्लौदिया और दूसरे सभी
विश्वासी सलाम कहते हैं।

22 प्रभु यीशु तुम्हारी आत्मा के साथ हों और
परमेश्वर की असीम कृपा भी। ऐसा ही हो।

---

[a] **4.2** वचन [b] **4.7** कुश्ती [c] **4.8** न्यायी [d] **4.13** लेख [e] **4.18** योजना

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com